Semester II Course - 9

Assessment for learning

* APPROACHES OF EVALUATION

1) formative Evaluation
2) Summative evaluation

1) FORMATIVE EVALUATION ⇒ (संरचनात्मक मूल्यांकन)

When any education plan is evaluated during its development stage and corrected accordingly, then the evaluation is known as formative evaluation, i.e evaluation during formative stage.

Whenever any educational plan is evaluated to increase its quality, effectiveness, desirability and utility, then it is known as formative evaluation. Thus it is clear from discussion that any educational plan, if evaluated or corrected before or finally approving it, then it is formative evaluation.

यदि शैक्षिक कार्यक्रम के दौरान समय समय पर छात्रों की उपलब्धि का मूल्यांकन किया जाता है तो इस प्रकार के मूल्यांकन को संरचनात्मक मूल्यांकन कहा जाता है। क्योंकि इस मूल्यांकन का उद्देश्य छात्र द्वारा अर्जित ज्ञान का आकलन करके उसमें आवश्यक सुधार करना है। इसका उद्देश्य छात्रों एवं अध्यापकों को पोषण प्रदान करना है

Scanned by CamScanner

संरचनात्मक मूल्यांकनकर्ता शिक्षा जगत की आवश्यकताओं वास्तविकताओं के अधिक निकट रहता है तथा शैक्षिक कार्यक्रमों, योजनाओं या निर्माण मे अधिक सार्थक रूप अदा करता है। यह शैक्षिक कार्यक्रम, योजना या सामग्री को अधिक प्रभावशाली बनाने का प्रयास करता है। यह केवल निष्कर्ष, निर्णायक मंडल का सदस्य मात्र नही होता वरन् प्रायः कार्यक्रम बनानेवाली समिति का एक सक्रिय सदस्य होता है।

2) SUMMATIVE EVALUATION (योगात्मक मूल्यांकन)

After finalising and implementing an education plan, to evaluate its desirability in Summative evaluation, the aim of such evaluation is to know whether the scheme or plan should be continued or not.

The aim of such evaluation is to know whether a scheme should be continued or not and to find out which of several alternatives should be continued and which should be left out.

Eg- If a teacher has to refer a book to his students and he after evaluating several available books, refer this one, then this sort of evaluation is known as Summative evaluation. It is process of selecting best out of available

Scanned by CamScanner

- alternatives.

~~संरचना~~ योगात्मक मूल्यांकन ⇒ (Summative)

इसका अभिप्राय किसी पूर्व निर्मित शैक्षिक कार्यक्रम योजना या सामग्री समस्त वांछनीयता को ज्ञात करने की प्रक्रिया से है। यह किसी शैक्षिक कार्यक्रम; योजना या सामग्री के गुण एवं दोषों की जानकारी इसलिए एकत्रित करता है जिसे उस कार्यक्रम, योजना, सामग्री को स्विकार करने या भविष्य मे जारी रखने के संबंधो में निर्णय लिया जा सके।

योगात्मक मूल्यांकन पहले से निर्धारित कार्यक्रमो, योजनाओं या सामग्री से भविष्य मे यथावत जारी रखने अथवा उपलब्ध अनेक विकल्पात्मक कार्यक्रमों या सामग्री मे से किसी एक सर्वाधिक उपयुक्त का चयन करने कि दृष्टि से किया जाता है। इसी प्रकार विगत वर्षो से चल रही प्रवेश विधि पाठ्यक्रम आदि को आगामी वर्षो मे जारी रखने या न रखने ~~कि~~ की दृष्टि से योगात्मक मूल्यांकन किया जा सकता है। किसी प्रस्तावित कार्यक्रम योजना विधि सामग्री आदि का भी योगात्मक मूल्यांकन किया जा सकता है। यह उपलब्ध विकल्पों के गुण व दोषों का आकलन करके ~~सार्थ~~ उपयुक्त विकल्प को चयन करने की प्रक्रिया है।

Scanned by CamScanner